भजन

तर्ज– होती कुछ भी मोहब्बत जो हमसे

मिली पाक जो निसवत तुम्हारी,मेरा रूहे चमन खिल गया है
आपने जो इनायत कर दी,मानों सहरां में गुल खिल गया हो

1– महबूब पिया तुम मेरे,मेरे वल्लभ हो साहिब मेरे
जो पैमाना कभी न हो खाली,ऐसा जामें अर्श दे दिया है

2–आज इतनी पिला दे साकिया,मुझे अर्श यहीं पे दिखा दे
तेरे मयखाने में दम निकले,तुमने नाता वो जोड़ दिया है

3–आला अन्दाज तेरी मेहर के,सुख देते यहाँ पर अर्श के
पा गया वो हकीकी मस्तियां,तेरी नजरों से जो पी गया है